मूल्य – 5 रु.

तारांशु

मासिक
अगस्त – 2017
वर्ष 5, अंक 11, पृ.सं. 20

Tara
बुजुर्गों के लिए...

साहस कथाएँ विशेषांक

शिखर भार्गव पब्लिक स्कूल
उदयपुर के

साहसी बच्चों की टोली

आनन्द वृद्धाश्रम के नवीन परिसर का निर्माण कार्य तेजी से अग्रसर

आनन्द वृद्धाश्रम नवीन परिसर के निर्माण हेतु योगदान योजना

आनन्द वृद्धाश्रम में वर्तमान में 45 बेड हैं और प्रतिमाह 2 के औसत से जानकारी मांगी जाती है जो वृद्धाश्रम में रहना चाहते हैं। जगह खाली नहीं होने की वजह से भविष्य में किसी भी बुजुर्ग को निराश नहीं लौटाना पड़े इस विचार के साथ तारा संस्थान ने बैंक लोन लेकर 7000 वर्ग फीट भूमि खरीदी। इस भूमि हेतु हमारे दानदाताओं ने मुक्तहस्त सहयोग किया। आशा है अब नवीन परिसर निर्माण हेतु भी आप समस्त भामाशाह उसी प्रकार खुले दिल से सहयोग करेंगे।

भवन निर्माण सौजन्य राशि :

भवन निर्माण ''दधिचि''	भवन निर्माण ''कर्ण''	भवन निर्माण ''भामाशाह''
रु. 1,00,000/-	रु. 51,000/-	रु. 21,000/-

अनुक्रमणिका

विषय	पृष्ठ संख्या
आनन्द वृद्धाश्रम के नवीन परिसर का निर्माण/ योगदान हेतु दान योजना	02
अनुक्रमणिका	03
साहस	04
आदर्श समाज ?	05
साहस कथा : श्रीमती धापू बाई / श्रीमती रेखा छीपा	06
साहस कथा : श्रीमती रेखा लौहार / श्रीमती नसरीन बानो	07
साहस कथा : श्री विवेकानन्द खरे / श्री कैलाश चन्द्र सोनी	08
साहस कथा : श्री राजेन्द्र सोनी / श्रीमती बशीरन बाई	09
साहस कथा : श्रीमती कविता श्रीवास्तव / श्री सत्यनारायण मोदी	10
साहस कथा : शिखर भार्गव पब्लिक स्कूल	11
साहस कथा : मस्ती की पाठशाला	12
साहस कथा : सुश्री अकिला बानो / मासिक न्यूज अपटेड	13
विनम्र अपील	14
मासिक अपडेट्स : मोतियाबिन्द जाँच शिविर	15-16
स्वागत	17
धन्यवाद	18
सम्पर्क सूत्र - तारा संस्थान	19

आशीर्वाद - डॉ. कैलाश 'मानव', संस्थापक - नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

श्रीमती कल्पना गोयल (बाएं) अपने पूज्य पिता डॉ. कैलाश ''मानव'' की सन्निधि में साथ में संस्थान सचिव श्री दीपेश मित्तल (दाएं)

आशीर्वाद
डॉ. कैलाश 'मानव'
संस्थापक एवं प्रबन्ध न्यासी,
नारायण सेवा संस्थान (ट्रस्ट), उदयपुर

आभार
श्री एन.पी. मार्गव
मुख्य संरक्षक, तारा संस्थान,
उद्योगपति एवं समाजसेवी, दिल्ली

श्रीमती शमा - श्री रमेश सचदेवा
संरक्षक,
उद्योगपति एवं समाजसेवी, दिल्ली

श्री सत्यभूषण जैन
संरक्षक,
प्रमुख समाजसेवी, दिल्ली

श्रीमती सुमन - श्री अनिल गुप्ता (ISKCON)
संरक्षक, उद्योगपति एवं समाजसेवी,
दिल्ली

प्रकाशक एवं सम्पादक
कल्पना गोयल

दिग्दर्शक
दीपेश मित्तल

कार्यकारी सम्पादक
तरुण सिंह राव

ले-आउट व ग्राफिक डिजाइनर
गौरव अग्रवाल

आवरण चित्र
अरविन्द शर्मा

'तारांशु' - स्वत्वाधिकारी, श्रीमती कल्पना गोयल द्वारा 240-ए, हिरण मगरी, सेक्टर - 6, उदयपुर (राज.) 313002 से प्रकाशित तथा मुद्रक श्री सत्यप्रकाश कुमार शर्मा द्वारा सागर ऑफसेट प्रिन्टर, इण्डिया प्रा. लि. प्लॉट नं. 518, इकोटेच - III, उद्योग केन्द्र एक्टेंशन - II, ग्रेटर नोएडा, गौतम बुद्ध नगर (उत्तर प्रदेश) में मुद्रित, सम्पादक - श्रीमती कल्पना गोयल

साहस

तारांशु का हर अंक यों तो बहुत विशेष होता है लेकिन यह अंक थोड़ा अधिक विशेष है क्योंकि हम बात कर रहे हैं ''हिम्मत'' की, ऐसी हिम्मत जो अपने ''स्वयं'' को बनाए रखने की है। मैं भी शायद इतनी हिम्मतवर नहीं हूँ जितने ये लोग, जिनके बारे में बताया गया है वो हैं या और भी लाखों करोड़ों लोग होते हैं, लेकिन इन सब से प्रेरणा तो ली ही जा सकती है और ये ही मैं भी करती हूँ जीवन तो सीखने की सतत प्रक्रिया है और मैं भी इन हिम्मतवर लोगों से बहुत कुछ सीखती हूँ।

जो काम कर रहे हैं, उसमें ऐसे साहसी लोग अकसर सामने आते रहते हैं। छोटी–छोटी लड़कियाँ जिनके पति नहीं रहे और वे सारी दुनिया से लड़कर अपने बच्चों का लालन–पालन कर रही हैं, कुछ को हम अपने यहाँ कॉल सेन्टर में नौकरी पर रख लेते हैं, ऐसी बच्चियाँ जिन्होंने जिन्दगी में सोचा ही नहीं कि उन्हें काम करना पड़ेगा, बस माता–पिता की इच्छा से शादी कर ली और लगा की जीवन पति के सहारे कट जाएगा लेकिन जैसा सोचते वैसा होता तो जीवन बहुत अच्छा होता। पति नहीं रहा तो सारे रिश्ते बदल गए और जिन्दगी की लड़ाई शुरू हो गई लेकिन वो लड़ रही है इस दुनिया से, इस समाज से सबका लक्ष्य सिर्फ एक ही है कि बच्चों की अच्छी परवरिश हो जाए। कई समाजों में अभी भी विधवा महिला की दूसरी शादी नहीं होती तो ये बच्चियाँ अपनी सारी खुशियाँ न्योछावर कर साहस से खड़ी हैं।

ऐसा ही साहस बहुत से हमारे बुजुर्गों ने दिखाया है ''लोग क्या कहेंगे'' इस सोच को ठुकराकर, छोड़ दिया वो घर, जहाँ बच्चे ने जिल्लत दी... यह हमारे समाज की विडंबना है कि अपने बच्चों के लिए हर व्यक्ति उधार लाकर भी खर्च करता है लेकिन माता–पिता जो बुढ़े हो गए हैं उनके लिए कुछ भी करना व्यर्थ लगता है कुछ हकीकतें तो ऐसी भी सामने आई कि लगा माता–पिता तो उस कबाड़ की तरह हो गए जिसे रद्दी वाले को दे दिया जाये लेकिन समाज का डर की ''लोग क्या कहेंगे'' ने उनको ऐसा नहीं करने दिया और माता–पिता की सेवा का मुखौटा पहने अपने जन्मदाता को तकलीफ देते रहे। घर छोड़ना कभी भी आसान नहीं होता लेकिन फिर भी कितने ही ऐसे बुजुर्ग हैं जिन्होंने साहस किया और अभी सुकुन से रह रहे हैं।

एक माँ तो ऐसी देखी थी जिनका बेटा मोतियाबिन्द का ऑपरेशन ही नहीं करवा रहा था और उन्हें दिखना कम होता जा रहा था तो हिम्मत की और वे हमारे कैम्प की गाड़ी में बैठकर अपने आप आ गई। वे साहस न करती तो आँख गवाँ देती। अच्छी तरह पता है कि साहस की बात करना बहुत आसान है... ''साहस'' करना बहुत ही मुश्किल है। फेसबुक या वाट्सऐप पर लोगों के मैसेज पढ़ती हूँ जिनमें पाकिस्तान या चीन से युद्धोन्माद की बातें होती हैं तो अजीब लगता है क्योंकि इस तरह की बात करने वालों में किसी के बच्चे फौज में नहीं होते। निश्चित रूप में फौजियों वाला वो साहस तो अद्वितीय होता है जिसमें पता है कि हम हो न हो पर देश बचा रहे।

वैसा साहस तो नहीं लेकिन आत्मसम्मान को तो बचाने का साहस रख ही सकते हैं। इस कोशिश में प्रेरणा लेने और देने के प्रयास में कुछ हिम्मतवर हकीकतें तारांशु में दी है... आपको पसंद आएगी।

आदर सहित...!

कल्पना गोयल

सफलता एक विज्ञान है, यदि परिस्थितियाँ हैं तो परिणाम मिलेगा।

आदर्श समाज ?

आज सब ये लेख लिखने बैठा तो आज ही के अखबार में एक खबर अनायास ही याद आ गई कि एक बेटा अमेरिका से मुम्बई आया तो उसे फ्लेट में अपनी माँ का कंकाल मिला। सच में लगता ही नहीं कि ऐसा आज के जमाने में भी हो सकता है जबकि टेलीफोन, इंटरनेट और संचार के इतने साधन हैं कि बेटा यदि अंतरिक्ष में हो तो भी माँ की खोज खबर रख सकता है, लेकिन फिर लगा कि आज के जमाने में ही तो ये संभव है जब रिश्तों की चमक इतनी फीकी हो जाए कि बच्चों की माँ यदि मर जाए और कंकाल भी बन जाए और इतने दिन एक बेटे को ध्यान ही नहीं आए कि मेरी माँ कैसी है। खबर में जैसा लिखा था कि माँ की मृत्यु शायद भूख से हुई क्योंकि उनकी लाश में ज्यादा मांस बचा ही नहीं था इसीलिए बंद फ्लेट से मृत शरीर की बदबू नहीं आई और वो धीरे–धीरे कंकाल बन गया। जहाँ तक मुझे समझ है शरीर से कंकाल बनने में कुछ महीने तो लगते ही हैं तो क्या कुछ महीनों तक माँ की खोज ख़बर नहीं मिली तो बेटे का दिल नहीं घबराया कि माँ कहाँ है और तो और पड़ोसियों ने भी नहीं सोचा कि इस फ्लेट में कोई हलचल नहीं है। मैंने सुना था कि विदेशों में ऐसा होता है कि दो लोग सालों साल एक दूसरे के पास रहते हैं और एक दूसरे की शक्ल भी नहीं जानते हैं हम भी उस ओर तो नहीं जा रहे?

आनन्द वृद्धाश्रम जब प्रारम्भ किया था तो सोच थी कि गाँवों के रहने वाले वो बुजुर्ग जिनके बच्चे उनसे दूर बड़े शहरों में काम की तलाश में चले गए और कोई देखरेख करने वाला नहीं वो आराम से रह सकें, लेकिन गाँवों से कोई नहीं आया और जो एक दो आए भी वो भी वापस गाँव चले गए क्योंकि शायद उन्हें अपनी टूटी–फूटी झोंपड़ी ज्यादा बेहतर लगी या फिर इसे यूँ समझें कि वो वातावरण जिसमें अड़ोसी–पड़ोसी बोले या उनके हाल चाल पूछे वो ज्यादा अच्छा लगा। बचपन से पढ़ते आए हैं कि मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है पर धीरे–धीरे कहीं ये वाक्य अप्रासंगिक न हो जाए क्योंकि मुम्बई जैसे महानगर में एक महिला जिसके 6–6 करोड़ के दो फ्लेट हों वो अगर भूख से तड़प कर मर जाए तो सारी सामाजिकता व्यर्थ है। आप सोचिए उस तिल–तिल कर अंतिम सांस लेती एक माँ का दर्द, सच में रोंगटे खड़े हो जाते हैं, मन सोचता है कि काश ऐसा न हुआ हो लेकिन यह कड़वी हकीकत है।

बहुत से लोग हमें मिलते हैं और कहते हैं कि वृद्धाश्रम भारतीय संस्कृति का हिस्सा नहीं है और वृद्धाश्रम होने नहीं चाहिए, अच्छी सोच है। आदर्श समाज में वृद्धाश्रम नहीं होने चाहिए ऐसा तो मैं भी कह सकता हूँ लेकिन हकीकत में क्या समाज आदर्श है? वृद्धाश्रम में जितने भी बुजुर्ग रह रहे हैं शायद वो अपने जीवन का अंतिम समय बेहतरीन गुज़ार रहे हैं, बेहतरीन इसलिए नहीं कि उन्हें अच्छा खाना, रहना, दवाइयाँ, वगैरह मिल रही बल्कि उनके पास हमेशा 20–25 लोग है जिनसे वो बोल सकते हैं साथ में समय बिता सकते हैं। और अब तारा संस्थान एक और वृद्धाश्रम बना रही है जिससे कि निरंतर आ रहे हमारे बुजुर्गों को निराश न जाना पड़े।

आप भी तो हमारे साथ ही खड़े हैं न क्या पता आपका और हमारा छोटा सा प्रयास किसी और शरीर को कंकाल बनने से बचा सके।

दीपेश मित्तल

साहस कथा – 1 :

श्रीमती धापू बाई : मेरा जीवन तब सार्थक हो जाएगा जब मेरे बच्चे बड़े होकर आत्मनिर्भर बन जाएँगे।

मैं 30 वर्ष की 3 छोटे–छोटे बच्चों की विधवा माँ हूँ। मेरे पति अकसर बीमार रहते थे और लगभग 5 वर्ष पहले अंततः चल बसे। उनके इलाज में मैंने मेरे गहने बेच दिए अब नितांत गरीबी की नौबत आ गई। घर परिवार या रिश्तेदार कोई विशेष मदद नहीं करते हैं। लेकिन बच्चों की खातिर ज़िदा हैं। बहुत–बहुत इनके लिए इधर–उधर से मांग कर भी काम चलाया है ताकि इन बच्चों को पाल सकूं। अब मेरी हिम्मत और विश्वास और भी बढ़ गया है क्योंकि तारा संस्थान मुझे हरसंभव सहायता उपलब्ध करवा रहे हैं।

साहस कथा – 2 :

मात्र 1000 रु. में एक विधवा महिला को सहयोग दे

श्रीमती रेखा छीपा : मुश्किलों में मन मजबूत कर कर्म करते रहना ही जीवन है।

एक दिन जब मेरी आँख खुली तो अनजाने से माहौल में पाया। पता चला मैं 2 दिन से बेहोशी में थी और मेरे दोनों पुत्र भी अस्पताल में थे। आगे खबर सुनी तो एकबारगी फिर से होश खो दिया : मेरे पति की मृत्यु हो चुकी थी। मेरा जीवन अंधकारमय हो चुका था। ये सब हुआ एक सड़क दुर्घटना में, जब मेरे पति, मैं और मेरे दोनों पुत्र स्कूटर से चित्तौड़ से लौट रहे थे।

अगली खबर सुन कर फिर सन्न रह गई, छोटे पुत्र को चोट की वजह से कमर के निचले हिस्से में लकवा मार गया। अस्पताल से छूटने के बाद भाई ने सम्भाला पर पुत्र के इलाज के लिए 15 लाख रु. चाहिए ऐसा डॉक्टरों ने बताया। अकेले मेरे पति कमाऊँ थे मैं क्या करूँ कैसे करूँ? फिर भी मन मजबूत कर सोचा कर्म ही जीवन है सो, घरों में छोटा–मोटा काम कर पैसे जमा करना शुरू किया और बच्चे का इलाज चालू रखा। 4–5 वर्षों से लगातार कई प्रकार के छोटे–मोटे कार्य करके बच्चे के इलाज में लगी रही ताकि एक दिन ईश्वर उसे जरूर खड़ा करेगा। मेरा विश्वास है कि हौंसला और कर्म सतत् साथी होने चाहिए वरना तो शायद मैं अपने बच्चे को मरने ही छोड़ देती। मेरे जीवन में आशा व हौसला बनाए रखने में तारा संस्थान का भी बहुत बड़ा योगदान है। अनेक धन्यवाद।

गौरी योजना सेवा (प्रति विधवा महिला सहायता)

01 वर्ष – 12000 रु.	06 माह – 6000 रु.	01 माह – 1000 रु.

जो सपने देखने की हिम्मत रखते हैं वो पूरी दुनिया जीत सकते हैं।

साहस कथा – 3 :

श्रीमती रेखा लौहार : बेटियों की खातिर जानवरों के बाड़े में रह रही थी

शिखर भार्गव पब्लिक स्कूल में सेवाएँ देती रेखा लौहार

पति की मृत्यु के बाद रेखा के ससुराल वालों ने उसे व उसकी तीनों बेटियों को घर से बाहर निकाल दिया। मरती क्या न करती, रेखा ने अपनी 3 छोटी–छोटी बच्चियों के साथ घर के बाहर स्थित एक पशुओं के बाड़े में शरण ली। यहीं रहना, जो भी इधर–उधर से मिले उसे खाना–पीना व रात को सोना भी वहीं। बेचारी लगभग पशुवत जीवन जी रही रेखा पर एक बार मीडिया का ध्यान गया और उनकी खबर पर पुलिस ने कार्रवाई कर रेखा को ससुराल वालों से एक कमरा दिलवाया। इतनी विपरीत परिस्थि–तियों के बावजूद वह अपनी बच्चियों को स्कूल भेजने और उनकी पढ़ाई को लेकर चिंतित थी अपने बच्चियों के भविष्य को लेकर। तो फिर तारा संस्थान ने उन्हें गौरी योजना के अन्तर्गत मासिक पेंशन शुरू की तथा शिखर भार्गव स्कूल में उसे नौकरी भी दे दी। साथ–ही–साथ उसकी 3 बेटियों को भी स्कूल में दाखिला दे दिया। रेखा दानदाताओं को ईश्वर सा मानकर कृतज्ञ है कि उसका जीवन पुनः मानव जैसा हो पाया है।

साहस कथा – 4 :

श्रीमती नसरीन बानो : बेटियों को पढ़ा कर बहुत ऊँचा उठाऊंगी

मैं (30 वर्षीया) पांच वर्ष पूर्व अपने पीहर दूसरी डिलीवरी हेतु आई थी, मेरी पहले से एक बेटी है। पति रईस ने सन्देश भेजा कि अगर बेटा हुआ तभी वापस लौटना। मेरा नसीब देखिये कि मेरे फिर एक पुत्री जन्मी। पति वापस लेने को तैयार नहीं मेरे माँ–बाप ने रईस को बहुत समझाया लेकिन वह टस–से–मस नहीं हुआ। फिर पिता ने कहा कि ऐसे आदमी से तो बच्चियों के साथ अनहोनी होने का अंदेशा भी है सो उन्होंने अपनी दोनों बच्चियों के साथ मुझे यहीं हमेशा के लिए रहने को कहा। तबसे मैं अपने माँ–बाप के घर ही रह रही हूँ। ससुराल से आज तक कोई बच्चियों को देखने तक नहीं आया। मैं सिलाई वगैरह करके कुछ खर्चा निकालती हूँ। बाकी कोई आसरा नहीं है लेकिन मैं जी रही हूँ तो सिर्फ इन बेटियों के लिए। फिर तारा संस्थान से मासिक पेंशन मिलने लगी तो उम्मीद की एक किरण जगी। मैंने भी ठान ली है कि इन बेटियों को पढ़ा–लिखा कर इतना ऊँचा उठाऊंगी कि वे किसी भी तरह से लड़कों से कम नहीं लगें, फिर जाकर रईस की गर्दन शर्म के मारे झुक जाएगी। नसरीन ने इसी वर्ष 10वीं कक्षा अच्छे नम्बरों से उत्तीर्ण की है। इसी को देखते हुए तारा संस्थान ने उन्हें नौकरी पर रखा है।

तृप्ति योजना सेवा (प्रति बुजुर्ग खाद्य सामग्री सहायता)

01 वर्ष – 18000 रु.	06 माह – 9000 रु.	01 माह – 1500 रु.

साहस कथा – 5 :

श्री विवेकानन्द खरे : घोर विपत्तियों के बावजूद जीने की ललक

मुम्बई वासी अविवाहित श्री विवेकानन्द खरे मैकेनिकल के पद से रिटयर हुए। इनका मुम्बई के पॉश इलाके जुहू में फ्लेट था जिस पर इनके भाई की लालची नज़र गड़ गई। उसने विवेकानन्द जी को फुसला कर फ्लेट बेच कर पैसा उसे देने को कहा और आश्वासण दिया कि वह और उसका परिवार ताउम्र विवेकानन्द जी की देखभाल करेंगे। विवेकानन्द झांसे में आ गए और फ्लेट बेचकर पैसा भाई को दे दिया। भाई और उनके परिवार ने विवेक जी की थोड़े समय तो देखभाल की लेकिन फिर कुछ–न–कुछ कारण बताकर उनको घर से निकाल कर मुम्बई के ही एक वृद्धाश्रम में छोड़ दिया जहाँ पर वृद्ध लोगें से रहने खाने पीने का पैसा लिया जाता था। विवेक अपना शेष जीवन वहाँ बिता लेते लेकिन जिस भाई ने फ्लेट का सारा पैसा अपने पास रख लिया था उसने वृद्धाश्रम को पैसा देना भी बन्द कर दिया तो वृद्धाश्रम ने भी विवेक जी को बाहर निकाल दिया। बस यही से विवेक जी सड़क पर आ गए और भिखारियों का जीवन बिताने लगे। यदि रमेश भाई विवेक को तारा संस्थान में नहीं भेजते तो वे भी मुम्बई की सड़क पर एक लावारिस लाश बनकर समाप्त हो जाते। लेकिन नियति उनको बचाना चाहती थी तो विवेक बच गए। विवेक एक अच्छा खाता–पीता जीवन आनन्द वृद्धाश्रम में और सभी बुजुर्गों के साथ मिल जुलकर बिता रहे थे.... कुछ महीनों पहले विवेक जी के मुँह में एक गाँठ का पता लगा। उदयपुर के सरकारी मेडिकल कॉलेज में उनको दिखाया गया तो डॉ. ने आशंका व्यक्त की थी कि शायद यह गाँठ कैंसर हो सकती है। गाँठ की बायोप्सी करवाई गई और डॉक्टर की आशंका सच निकली––विवेक को कैंसर था। तारा संस्थान ने काफी जद्दोजहद करके इनका कैंसर का इलाज करवाया। ऑपरेशन से लेकर कीमोथैरेपी तक सब कुछ। इसके पश्चात् विवेक जी हालांकि पुनः ज्यादा मजबूत शरीर तो नहीं रहे लेकिन जीवन जीने की इनकी अभिलाषा ने इन्हें बचा रखा है। वह छड़ी के सहारे पैदल बाहर घूम भी आते हैं।

साहस कथा – 6 :

श्री कैलाश चन्द्र सोनी : लगभग एक शतक की जीवन यात्रा

94 वर्षीय मूलतः बाराबांकी (उ.प्र.) के निवासी श्री कैलाश चन्द्र जी सोनी बचपन से ही संघर्षरत रहें हैं। विशेषकर पिताजी की मृत्यु के बाद। जैसे–तैसे पढ़ाई पूरी कर नौकरी की। विभिन्न पदों और स्थानों पर कार्य करते हुए ये 1980 में रिटायर हुए फिर कुछ सालों बाद उन्हें अपने एक पुत्र व पुत्री की मृत्यु भी देखनी पड़ी। पति–पत्नी दोनों ने जीवन के उतार–चढ़ाव साथ–साथ झेले लेकिन 2014 में पत्नी की मृत्यु के बाद थी कैलाश जी सोनी नितांत अकेले पड़ गए। चूंकि यह सेवा कार्यों से जुड़े हुए थे इसलिए एक सेवादार उन्हें आनन्द वृद्धाश्रम ले आया। अब बाकी जीवन अपने जैसे ही लोगों के साथ आनन्द से गुजार रहे हैं।

3500 रु. (1 समय 40–45 बुजुर्ग)	21000 रु. संचित राशि (वर्ष में 1 बार)

सब रोगों की एक दवाई हँसना सीखो मेरे भाई।

साहस कथा - 7 :

श्री राजेन्द्र सोनी : खून से सींचे बच्चे भी अपने नहीं रहे

श्री सोनी तारा नेत्रालय, उदयपुर में सेवाएँ देते हुए

मैं राजेन्द्र सोनी भरतपुर (राज) के छोटे से गाँव से हूँ। मेरा पुश्तैनी कार्य सुनारी का था परन्तु मैंने इस कार्य को नहीं किया क्योंकि लोग इस कार्य पर बेईमानी का ठप्पा लगाने लग गए थे। मैंने 10 वीं की पढ़ाई के बाद ऐटा (यू.पी.) में 3 साल तक रेडियो मैकेनिक का काम सीखते हुए किया, इलेक्ट्रोनिक्स का कार्य भी सीखा। परन्तु, दुकान मालिक से मनमुटाव होने पर मैंने अपने घर के पास खुद की दुकान खोल ली। 25 वर्ष की उम्र में मेरी शादी हो गई। जीवन अच्छा चल रहा था। मेरे 2 बच्चे व 2 बच्चियाँ हुईं। वे सब अच्छे से सैटल हैं। जब मैंने मकान बनाना शुरू किया तो धीरे – धीरे उधारी हो गई। सारे पैसे खत्म हो गए एक वक्त ऐसा भी आया जब बच्चों को दो दिन से खाना नहीं मिला तो मेरा दिल पसीज गया। मैंने जयपुर जाकर अपना खून बेचा बच्चों के लिए खाने का प्रबंध किया और आज वे बच्चे ही पत्थर दिल हो गए। सन् 1994 में मेरी पत्नी के देहांत के बाद मेरी गृहदशा बिगड़ने लगी। मेरे बड़े भाई ने मेरे मकान पर लालची नज़र गढ़ा दी। इनके बड़े पुत्रों को भी शराब वगैरह पिला कर मुझे परेशान करवाया करते थे। इस तरह की बदमाशी से परेशान होकर मैंने घर छोड़ दिया। कई साल तक अलग – अलग साधुओं की टोलियों में घूमते रहा। करीब 3 साल के बाद वापस घर पहुँचा तो भी बच्चों ने घर बिकवाने का दबाव बनाया, मना करने पर परेशान करते थे। अन्ततः घर छोड़कर किसी पहचान के द्वारा आनन्द वृद्धाश्रम गया। मैं यहाँ पिछले कई वर्षों से रह रहा हूँ और तारा नेत्रालय के सेवा कार्यों में अपनी तरफ से हर संभव हाथ बंटाता हूँ।

साहस कथा - 8 :

श्रीमती बशीरन बाई : बरसों से बेटी के लौट आने की उम्मीद में

बशीरन बाई 80 वर्ष से ऊपर की वृद्धा महिला है जिन्हें इनकी पुत्री व दामाद ने अकेला छोड़ दिया और शहर छोड़कर चले गए। कुछ दिन बशीरन बाई सुखी रोटियों के सहारे ज़िदा रही यह सोचकर कि पुत्री–दामाद कहीं बाहर काम से गए होंगे और जल्द ही लौट आएँगे। लेकिन ऐसा होना नहीं था। कई दिनों से भूखी–प्यासी, बदहाल बशीरन बाई कमरे से बाहर निकल कर सड़कों पर पुत्री को ढूँढ़ने लगी। उनकी दयनीय स्थिति देखकर एक भले आदमी ने कुछ दिन उन्हें अपने घर में रखा फिर जब उन्हें आनन्द वृद्धाश्रम के बारे में पता चला तो यहाँ छोड़ गया। बशीरन बाई यहाँ मजे से रहती हैं कोई दिक्कत नहीं लेकिन उनकी बुढ़ी आँखों में अभी भी उनकी पुत्री के लौट आने की उम्मीद बाकी है।

साहस कथा – 9 :

श्रीमती कविता श्रीवास्तव : ईश्वर ने हाथ पैर दिए हैं कुछ न कुछ करते रहूँगी।

मेरी शादी के डेढ़ साल बाद ही पति की मृत्यु हो गई। कुछ समय बाद ससुराल वालों ने प्रताड़ित करना शुरू कर दिया। अति होने पर मैं अपने पिता के पास लौट आई। उनकी मृत्यु के पश्चात् कुछ समय अपने भाई के यहाँ बिताया परन्तु कुछ परिस्थितिवश वहाँ से भी निकलना पड़ा। उम्र–दराज़ व अकेली स्त्री मैं हताश व निराश भटकने लगी और सोचा कि अब आत्महत्या ही एक रास्ता है। इसी उधेड़बुन में बरेली रेलवे स्टेशन पर थी कि एक ख्याल दिमाग में कौंध गया। सोचा कि ईश्वर ने हाथ पैर दिए हैं कुछ काम क्यों न किया जाए। सो कई दिन काम की तलाश में निकलती और रात को स्टेशन पर सोती थी। इसी प्रकार अनेक शहरों में भटकते हुए अनेक कामों पर हाथ आजमाया जैसे ट्यूशन अथवा टिफिन सेंटर आदि पर सब कामों में कहीं–न–कहीं अड़चन की वजह से छोड़ना पड़ा। इसी प्रकार 4 साल तक शहर–दर–शहर भटकती रही। अब नितांत अकेली और उम्र भी बढ़ रही थी ऐसी स्थिति में भाग्यवश एक दिन नारायण सेवा संस्थान का कार्यक्रम स्टेशन पर टी.वी. में देखा तो सोचा उनकी मदद ली जाए सो उदयपुर चली आई। अब तारा संस्थान ही मेरी जीवन संध्या का पड़ाव है। यहाँ भी मैं व्यस्त रहती हूँ और सिलाई व मरीजों को भोजन परोसने आदि का कार्य करती हूँ जो आत्मसंतुष्टि देता है।

साहस कथा – 10 :

श्री सत्यनारायण मोदी : जीवन भर की संघर्ष गाथा

मैं मध्यप्रदेश के धार जिले के एक गाँव का निवासी सत्यनारायण जी (68 वर्ष) हूँ। मेरा बचपन बड़े आराम से गुज़रा। पिताजी कपड़े के व्यापारी थे, मैंने हायर सैकण्ड्री परीक्षा अव्वल दर्जे से पास की। फिर सिविल इंजीनियरिंग कॉलेज में दाखिला लिया तबसे मेरे सितारे गर्दिश में आ गए। घर वालों का सहयोग मिलना बन्द हो गया और आखिरकार प्रथम वर्ष के बाद मुझे इंजीनियरिंग कॉलेज छोड़ना पड़ा। छोटे भाई ने पुश्तैनी मकान बेचकर सारे पैसे स्वयं रख लिए। फिर सिलसिला शुरू हुआ एक अन्तहीन संघर्ष यात्रा का। एक आर्किटेक्ट के यहाँ काम शुरू किया। इसके पश्चात प्लॉट बेचे, फिर प्रेस का काम सीखा। यहाँ तक कि इंदौर में सिक्योरिटी गार्ड का काम किया। इसी दौरान एक मोटर साइकिल ने टक्कर मार दी तो कूल्हे की हड्डी टूट गई। न पैसे थे न, अपना कोई संभालने वाला। इसलिए ऑपरेशन करवाने से मना कर दिया। 6 महीने तक अकेले बिस्तर में पड़ा रहा लेकिन इच्छा शक्ति के सहारे ठीक होकर फिर चलने लगा। परन्तु फिर किस्मत ऐसी फूटी कि एक बस में सफर के दौरान उछाल से उनकी हड्डी फिर टूट गई। फिर गाँव के नजदीक 10 दिन तक एक चबूतरे पर लाचार पड़ा रहा। आते–जाते राहगीरों ने खाना दिया तो जैसे तैसे ज़िंदा बचा। इसी प्रकार एक दिन वह ग्वालियर से भोपाल जाने के लिए बस में बैठा, बस से किसी ने मेरी अटैची चुरा ली तो जैसे–तैसे उदयपुर अपनी बहन के घर पहुँचा। उसी दिन सुबह अखबारों में पढ़ा कि भोपाल गैस त्रासदी में हजारों लोग मारे गए। ईश्वर ने दरअसल अटैची खोने के बहाने मेरी जान बचाई। मैं करीब तीन साल से आनन्द वृद्धाश्रम में हूँ।

आनन्द वृद्धाश्रम सेवा (प्रतिबुजुर्ग)

01 वर्ष – 60000 रु.	06 माह – 30000 रु.	01 माह – 5000 रु.

महान सपने देखने वालों के महान सपने हमेशा पूरे होते हैं।

शिखर भार्गव पब्लिक स्कूल : नन्हे-मुन्नों के बड़े-बड़े कारनामें - 1

करण गमेती, कक्षा – 7

करण एक दिन जब स्कूल से लौट रहा था तो देखा कि एक घर की सीढ़ियां पर एक छोटा सा बच्चा बैठा था और वह लगभग गिरने ही वाला था 3–4 सीढ़िया नीचे। इससे पहले कि बच्चा गिरता करण ने तुरंत बच्चे को सम्भाला और घर के अंदर उपस्थित बच्चे की माँ को आवाज़ देकर बुलाया। करण एक बहुत ही होनहार, मेधावी छात्र है एवं वह सभी शैक्षणिक और गैर–शैक्षणिक गतिविधियाँ में बढ़ते उत्साह से भाग लेकर उच्च स्थान पाता है।

अक्शा बानो, कक्षा – 8

अक्शा ने एक दिन एक बच्चे को कुत्ते से बचाया कुत्ते ने पुरी तरह से बच्ची को दबोचा हुआ था। अक्शा ने साहस दिखाकर उस कुत्ते को पत्थर मार कर भगाया एवं उस बच्ची को उसके चंगुल से निकाला। अक्शा बड़ी होकर बच्चों की डॉक्टर बनना चाहती है।

संतोष, कक्षा – 5

एक दिन संतोष अपने घर में खेल रहा था अचानक उसने अपने पड़ोसी के घर से किसी बच्चे के रोने की आवाज सुनी वो तुरंत भाग कर गया उसने देखा एक आधे एक साल के बच्चे ने अपनी गर्दन बर्तन की रेक में फंसा ली है जिसके घर में और कोई भी नहीं है और वह रो रहा था। संतोष ने तुरंत अपनी सूझ–बूझ के साथ अपने दोस्त को बुलाकर उस बच्चे की गर्दन को निकाला एवं उसकी माँ को सूचित किया। संतोष जीवन में बड़ा होकर एक नर्स बनना चाहता है एवं लोगी की सेवा करना चाहता है।

प्राणद, कक्षा – 5

प्राणद एक दिन दोपहर में घर में बैठ कर अपना होमवर्क कर रहा था तभी उसके एक बच्चे के चीखने की आवाज सुनी उसने बाहर निकलकर देखा एक 5 साल का बच्चा साइकिल चलाते वक्त गिर गया था उसे बहुत चोट आई थी। प्राणद ने 3 से उठाया और अपने घर ले गया। उसे प्राथमिक उपचार दिया और आराम करने को कहा तत्पश्चात् प्राणद उसे सुरक्षित घर छोड़ने गया।

विरल चुतर्वेदी, कक्षा – 7

विरल एक दिन दुकान जा रही थी। वहाँ से वह सामान खरीद के जैसे ही निकली उसने देखा एक महिला का बटुआ गिर गया जो काफी आगे निकल गई थी और उसे पता भी नहीं था। विरल ने उसे आवाज लगाकर रोका एवं अपनी ईमानदारी का प्रदर्शन कर वह बटुआ सड़क से उठाकर उसे लौटा दिया। महिला बहुत खुश हुई और विरल को धन्यवाद दिया। विरल भविष्य में बहुत अच्छी शिक्षिका बनना चाहती है।

आयुष प्रजापत, कक्षा – 12

एक दिन आयुष विद्यालय से घर की और जा रहा था अचानक आयुष ने कुत्ते के बच्चे की रोने की आवास सुनी उसने बहुत ढूंढा तो पाया एक नाली के नीचे एक कुत्ते का बच्चा फंसा हुआ था। आयुष ने उसे नाली से निकाला उसे उठाकर घर ले गया नहलाया और उसे दूध भी पिलाया उसके बाद उसके लिए एक छोटा सा घर बनाया। इस तरह आयुष ने एक जानवर की जान बचाकर मानवता का अच्छा उदाहरण दिया। आयुष प्रजापत बड़ा होकर एक साहसी पुलिस ऑफिसर बनना चाहता है।

मस्ती की पाठशाला : नन्हे-मुन्नों के बड़े-बड़े कारनामें - 2

मस्ती की पाठशाला के साहसी बच्चे अपनी शिक्षिकाओं के साथ

निशा मीणा

माता हलवाई के साथ पुरी बनाने जाती है और पिता कलर का काम करते हैं। एक बार पड़ोस की एक बच्ची नाली में गिर गई थी। निशा मदद के लिए लोगों को पुकारते हुए स्वयं बच्ची को बचाने दौड़ पड़ी। फिर लोगों की सहायता से उसे बाहर निकालकर बचाया। निशा डॉक्टर बनना चाहती है।

फाल्गुन खत्री

माता सिलाई का काम करती है और पिता ऑटो चालक है। माता–पिता दोनों ही मजदूरी के लिए घर से बाहर रहते हैं। एक बार का फाल्गुन की बहन को चोट लगकर पैर में घाव हो गया। इसने तुरंत इलाज कर मरहम पट्टी की। इंजीनियर बनकर देश का नया निर्माण करना चाहता है।

धीरज कन्ड़ारा

इनके परिवार में पाँच सदस्य है। माता और पिता दोनों ही सड़क सफाई का कार्य करते है। धीरज पशुप्रेमी है व छोटे–बड़ों सबको सबको कुत्तों को पत्थर मारने पर टोकता है। धीरज बड़ा होकर इंजीनियर व डांसर बनना चाहता है।

चन्दा नागदा

इसकी मम्मी तारा संस्थान में सफाई का काम करती है। घर पर सिलाई भी करती है। एक बार चन्दा की एक दोस्त के हाथ में कट लग गया और बहुत खून बहने लगा। चन्दा ने स्वयं तुरंत घाव की मरहम पट्टी कर स्थिति को बिगड़ने से बचाया। इंजीनियर बनने का सपना रखती है।

खुशबु ओड़

माता घर–घर झाड़ू–पोंछा करने जाती है और पिता मजदूरी करते हैं। ये तीन भाई–बहिन है जो दिन भर घर पर अकेले रहते हैं। खुशबू बहुत दयालु व हिम्मती स्वभाव की है। कई बार रास्ते के कोई रोता बच्चा मिल जाए तो उसे उसके घर छोड़ने जाती है। माता पिता की अनुपस्थिति में घर का सारा कार्य स्वयं करती है। बड़ी होकर टीचर बनना चाहती है।

झुग्गी झोपड़ी के 1 बच्चे की शिक्षा सौजन्य सहयोग रु. 12,000/- प्रति वर्ष

खुबसूरत लोग हमेशा अच्छे नहीं होते। अच्छे लोग हमेशा खुबसूरत होते हैं।

साहस कथा – 13 :

सुश्री अकिला बानो : जिस माँ ने मजदूरी करके पाला, उनका मजबूत सहारा हूँ मैं।

कदम–कदम पर संघर्ष की कहानी हूँ मैं। चार बहिन– भाइयों में सबसे छोटी अकिला उदयपुर (राज.) के भटेवर गाँव की निवासी हूँ। जब मैं पाँच वर्ष की थी तभी मेरे पिता की कैंसर से मृत्यु हो गई। ऊपर से एक साल बाद ही मैं पोलियो का शिकार होकर दोनों पैरों से असमर्थ हो गई। भाई–बहिन सब शादी–शुदा होकर अलग हो गए और रह गई मैं और मेरी माँ अकेले। दरअसल भाई–बहिन रिश्तेदारों के लिए मैं एक बोझ हो गई थी लेकिन मेरी माँ ने हार नहीं मानी। बेहद गरीबी में उन्होंने मजदूरी करके मुझे पाला पोसा। फिर जब मैं कुछ बड़ी हुई तो मेरे माँ के जज्बे से प्रेरित होकर 10वीं कक्षा के बाद ट्यूशन पढ़ाते हुए 12वीं कक्षा पास की। तत्पश्चात् कम्प्यूटर कोर्स करके तारा संस्थान में नौकरी पाई। आज मैं दिव्यांग नहीं बल्कि सक्षम हूँ। 40 कि.मी. दूर से स्कूटर से रोज काम पर आती जाती हूँ। रास्ते में बच्चों और जरूरतमंदों को लिफ्ट भी देती हूँ जो अकिला एक जमाने में लोगों के लिए बोझ थी वही आज मेरी तारीफ के पुल बांधते हैं। लेकिन मुझे किसी से गिला–शिकवा नहीं है। आज मैं मेरी प्यारी माँ की हर इच्छा पूरी करने में सक्षम हूँ।

मासिक न्यूज अपटेड :

8 जुलाई, 2017 को 94.3 माई एफ.एम. उदयपुर ने अपने स्टेशन की 10 साल सफलता पूर्वक सम्पन्न होने की खुशी तारा संस्थान के आनन्द वृद्धाश्रम वासियों के साथ बांटी।

13 जुलाई, 2017 को तारा संस्थान ने अजमेर में एक स्नेह मिलन आयोजित किया जिसमें कई भामाशाहों ने भाग लिया।

31 जुलाई, 2017 को शिखर भार्गव पब्लिक स्कूल उदयपुर ने ''फल–सलाद व फ्रूट सजावट'' प्रतियोगिता का आयोजन किया।

विनम्र अपील :

जैसा कि आपको विदित है तारा नेत्रालय (उदयपुर, दिल्ली, मुम्बई व फरीदाबाद) जरूरतमंद निर्धनों हेतु आँखों के मोतियाबिन्द के मुफ्त इलाज करते हैं। इसी प्रक्रिया में हमें अनेक महंगी मशीनों व यंत्रों की आवश्यकता पड़ती है वर्तमान में निम्न मशीनों की तुरंत आवश्यकता है, कृपया मुक्तहस्त सहयोग करें।

HORIZONTAL AUTOCLAVE

Horizontal Autoclaves are smart investment for hospitals and laboratories, where large volume of sterilization is required. These units efficiently meet stringent sterilization requirements and well suited for sterilizing hospital dressings and surgical instruments, rubber and plastic goods, glassware and utensils etc.

Cost of this Machine : Rs. 3,18,000.00

YAG LASER

In ophthalmology, lasers are used to photocoagulate, cut, remove, shrink, and stretch ocular tissues. There are numerous ophthalmic applications for YAG lasers. The most common applications are Posterior capsulotomy, Anterior capsulotomy, Peripheral iridotomy, Vitreolysis, Corneal stromal reinforcement.

Cost of this Machine : Rs. 9,00,000.00 (Taxes Extra)

नेत्र चिकित्सा सेवा (मोतियाबिन्द ऑपरेशन)

17 ऑपरेशन - 51000 रु. | 09 ऑपरेशन - 27000 रु. | 06 ऑपेरशन - 18000 रु.

03 ऑपरेशन - 9000 रु. | 01 ऑपरेशन - 3000 रु.

नेत्र शिविर सौजन्य

मोतियाबिन्द जाँच-चयन-शिविर आयोजन एवं 30 ऑपरेशन सहयोग सौजन्य, प्रति शिविर - 151000 रु.
चश्मा जाँच - चश्मा वितरण दवाई सहयोग राशि, प्रतिशिविर - 21000 रु.

70वें स्वाधीनता दिवस पर तारा परिवार की शुभकामनाएँ !

झंडा ऊँचा रहे हमारा
विजयी विश्व तिरंगा प्यारा,
झंडा ऊँचा रहे हमारा।
सदा शक्ति बरसाने वाला,
प्रेम सुधा सरसाने वाला
वीरों को हरषाने वाला
मातृभूमि का तन-मन सारा,
झंडा ऊँचा रहे हमारा।

HAPPY 70th
INDEPENDENCE DAY

स्वतंत्रता दिवस का शुभ कामनाएँ

जब तक आप खुद पर विश्वास नहीं करते, तब तक आप भगवान पर विश्वास नहीं कर सकते।

मोतियाबिन्द जाँच - ऑपरेशन हेतु चयन शिविर

तारा संस्थान द्वारा निर्धन वृद्ध बन्धुओं की आँखों में सामान्यतः पाये जाने वाले मोतियाबिन्द के निदान और ऑपरेशन हेतु चयन के लिए शिविर आयोजित किये जाते हैं। दूरस्थ एवं ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले मोतियाबिन्द ग्रस्त बन्धुओं की स्थिति अधिक ही पीड़ादायक है, क्योंकि प्रथम तो उन्हें मोतियाबिन्द–ऑपरेशन की सुविधा आसानी से उपलब्ध नहीं है एवं द्वितीय, निर्धनता उनकी चिकित्सा में बड़ा अवरोधक है। तारा संस्थान ने ऐसे निर्धन बन्धुओं की जाँच हेतु शिविर लगाने एवं चयनित मोतियाबिन्द ग्रस्त बन्धुओं के शिविर स्थल के निकटवर्ती कस्बे या शहर में स्थित अधुनातन सुविधाओं से सम्पन्न नेत्र चिकित्सालयों या संस्थान के उदयपुर, दिल्ली व मुम्बई स्थित 'तारा नेत्रालय' में सर्वथा निःशुल्क ऑपरेशन करवाने का कार्य प्रारंभ किया है। निःशुल्क सुविधाओं में मोतियाबिन्द की जाँच, दवाइयाँ, लेंस, ऑपरेशन, चश्मे, रोगियों का परिवहन, भोजन तथा देखभाल आदि सम्मिलित है।

दानदाताओं के सौजन्य से माह जुलाई – 2017 के मध्य आयोजित शिविरों का संक्षिप्त विवरण

तारा नेत्रालय, उदयपुर में आयोजित शिविर

शिविर दिनांक	सौजन्यकर्त्ता	ओ.पी.डी.	चयनित रोगी	चश्मे	दवाई
05.07.2017	श्री कान हासोमल लखानी	214	11	107	103
19.07.2017	विजन फाउण्डेशन ऑफ इंडिया	174	19	46	72
27.07.2017	श्री के.के. गोयल, निवासी – लखनऊ (यू.पी.)	20 ऑपरेशन			

तारा नेत्रालय, दिल्ली में आयोजित शिविर

11.07.2017	विजन फाउण्डेशन ऑफ इंडिया	121	30	15	42

तारा नेत्रालय, मुम्बई में आयोजित शिविर

10.07.2017	विजन फाउण्डेशन ऑफ इंडिया	106	15	34	42
11.07.2017	विजन फाउण्डेशन ऑफ इंडिया	66	09	11	14
15.07.2017	विजन फाउण्डेशन ऑफ इंडिया	65	07	09	16

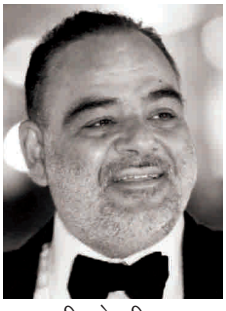

स्व. श्री पोण्टी चड्डा

स्व. सरदार कुलबन्त सिंह चड्डा की प्रेरणा से "The Ponty Chaddha Foundation" के सौजन्य से आयोजित शिविर

शिविर दिनांक	स्थान	ओ.पी.डी.	चयनित रोगी	चश्मे	दवाई
23.07.2017	सचखण्ड नानक धाम (रजि.), गुरुद्वारा रोड, इन्द्रापुरी, लोनी, गजियाबाद	810	26	456	743

इस शिविरों में चयनित सभी रोगियों के तारा नेत्रालय, दिल्ली एवं मुम्बई में निःशुल्क मोतियाबिन्द ऑपरेशन करवाए गए हैं।

मानवीय सेवा सौजन्य के लिए तारा संस्थान, उदयपुर, दिल्ली सिख गुरुद्वारा प्रबन्धक कमेटी एवम् वेव इन्फ्राटेक, दिल्ली के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करता है एवं स्व. सरदार कुलबन्त सिंह चड्डा के प्रति हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

अन्य दानदाताओं के सौजन्य से देशभर में आयोजित शिविरों की झलकियाँ

शिविर दिनांक	सौजन्यकर्त्ता	स्थान	ओ.पी.डी.	चयनित रोगी	चश्मे	दवाई
02.07.2017	राजस्थान क्लब	मॉडल टाउन, दिल्ली	630	25	364	590
02.07.2017	केन्ट आर.ओ. मिनरल	लोनी, गाजियाबाद	730	28	371	659
09.07.2017	विजन फाउण्डेशन ऑफ इंडिया	बुजड़ा, उदयपुर	179	09	22	141
10.07.2017	विजन फाउण्डेशन ऑफ इंडिया	भीण्डर, उदयपुर	180	25	32	49
10.07.2017	विजन फाउण्डेशन ऑफ इंडिया	सेक्टर 23, फरीदाबाद	300	20	75	200
13.07.2017	श्री द्वारकादास हजारी लाल मंगल धर्माथिक ट्रस्ट	कुराबड़, उदयपुर	178	25	29	41
13.07.2017	विजन फाउण्डेशन ऑफ इंडिया	कुराबड़, उदयपुर	178	15	29	41
13.07.2017	जय श्री कृष्णा	नांगलोई, दिल्ली	213	05	110	175
14.07.2017	वर्धमान प्लाजा	नेहरु पैलेस, नई दिल्ली	885	10	435	971
15.07.2017	विजन फाउण्डेशन ऑफ इंडिया	उत्तम नगर, नई दिल्ली	173	14	81	159
16.07.2017	विजन फाउण्डेशन ऑफ इंडिया	खेरवाड़ा, उदयपुर	250	30	49	129
16.07.2017	श्रीमती सुषमा - श्री सत्यभूषण जैन, दिल्ली	लोनी, गाजियाबाद	875	27	466	768
16.07.2017	कमला देवी मेमोरियल एजुकेशन वे. एवं चेरि. सो., दिल्ली	से. 25, द्वारका, नई दिल्ली	670	20	325	595
16.07.2017	श्रीमती प्रेम जी निझावन, निवासी - जनकपुरी, दिल्ली	मोहन गार्डन, दिल्ली	373	17	175	325
16.07.2017	महाराजा अग्रसेन सेवा संस्थान, मुम्बई	घाटकोपर (ई.), मुम्बई	167	15	102	125
22.07.2017	हीरालाल मोहन देवी रिटा गुप्ता मेमोरियल ट्रस्ट, दिल्ली	त्रि नगर, दिल्ली	841	14	365	802
23.07.2017	विजन फाउण्डेशन ऑफ इंडिया	उत्तम नगर, नई दिल्ली	277	27	137	250
23.07.2017	विजन फाउण्डेशन ऑफ इंडिया	दहीसर (ई.), मुम्बई	277	14	118	135
25.07.2017	जय श्री कृष्णा	नांगलोई, दिल्ली	980	18	467	817
30.07.2017	विजन फाउण्डेशन ऑफ इंडिया	कांदिवली (प.), मुम्बई	247	12	115	126
31.07.2017	राजदरबार पान मसाला एवं राजदरबार ग्रुप, दिल्ली	आर.के. पुरम, नई दिल्ली	535	10	305	480

कृपया आपश्री सहमति पत्र के साथ अपनी करुणा - सेवा भेजें

आदरणीय अध्यक्ष महोदया,

मैं (नाम) ..... सहयोग मद / उपलक्ष्य में / स्मृति में .....

संस्थान द्वारा संचालित सेवा कार्यों में रुपये ..... का केश / चैक / डी.डी. नम्बर .....

दिनांक ..... से सहयोग भेजने की सहमति प्रदान करता / करती हूँ।

मेरा पता (नाम) ..... पिता (नाम) .....

निवास पता .....

लेण्ड मार्क ..... जिला ..... पिन कोड ..... राज्य .....

फोन नम्बर घर / ऑफिस ..... मो.नं. ..... ई–मेल .....

तारा संस्थान, उदयपुर के नाम पर दान - सहयोग प्रदान करें।

हस्ताक्षर

चालीस जवानी का बुढ़ापा है, पचास बुढ़ापे की जवानी है।

तारा संस्थान में पधारे अतिथि महानुभावों का स्वागत सम्मान

श्री धारू राम, जोधपुर (राज.)

श्रीमती चमेली पुत्र श्री अजय कुमार, भिवानी (हरि.)

श्रीमती चन्द्रकान्ता सैनी, हिसार (हरि.)

श्रीमती नीलम माहिल, दिल्ली

श्री मनमोहन अग्रवाल - श्री संदीप दीक्षित, लखनऊ

श्रीमती तपन अग्रवाल, दाहोद (गुज.)

श्री विनोद कुमार सरवागी C/o गणेश गौरी सेल्स, छत्तीसगढ़

श्रीमती रतना छेत्री एवं श्री गोपाल प्रसाद शर्मा, सिक्किम

श्री अजय मोगरा, भुवाणा, उदयपुर

श्री आनन्दी लाल पामेचा, मन्दसौर (म.प्र.)

श्री संजीव ओबेरॉय, लुधियाना (पंजाब)

"तारा परिवार का सौभाग्य कि आपने अभिनन्दन का अवसर प्रदान किया"

श्रीमती प्रेम निझावन
दिल्ली

श्री अजय पौद्दार एवं परिवार
दिल्ली

श्री ज्ञानेश कुमार - श्रीमती कंचन

श्री बाबूलाल इंदोरिया
पुणे (महा.)

श्री जी. नेमीचन्द जैन
सिकन्दराबाद (तेलंगाना)

Thanks :

NAME AND PLACE OF THE DONORS, WE ARE GRATEFUL TO THEM

Donors are requested kindly to send their photographs alongwith Donation for publishing in TARANSHU

Mr. Pawan Kumar Taneja - Mrs. Kanta Rani
Delhi

Mr. Sham Sundar - Mrs. Seeta Rani Dhawan
Jalandhar (PB)

Mr. Hanuman Lal - Mrs. Seeta Devi Banjara
Ajmer (Raj.)

Mr. Hari Ram - Mrs. Meena Sharma
Shimla (HP)

Mr. Narendra Kumar - Mrs. Reena Devi Gehlot
Balotra - Barmer (Raj.)

Mr. Anil - Mrs. Vijaylata Jain
Alwar (Raj.)

Mr. Dungar Chand Darji &
Mrs. Parmeshwari Devi, Baytu - Barmer (Raj.)

Lt. Mr. Bhura Ram - Mrs. Sukhi Devi Gehlot
Balotra - Barmer (Raj.)

Mr. S.S. - Mrs. Shushila Bisht
Dehradun (UK)

Mr. Devendra K. Jain - Mrs. Meena Jain
Hazaribagh (Jharkhand)

Mr. Omprakash - Mrs. Satyawati Sharma
Gurgaon

Mr. Dhan Mohan - Mrs. Kamal Kasliwal
Jaipur (Raj.)

Lt. Mr. Praveen - Lt. Mrs. Suman Mukhija
Ratlam (MP)

Mr. Rajendra - Mrs. Kumud Jain
Aligarh - Haridwar (UK)

Mr. Jagdish Chander Jangid
& Mrs. Champa Devi
Gurgaon

Lt. Mr. Rameshwar Lal &
Mrs. Uttama Devi Prajapat, Bikaner (Raj.)

Mr. Madan Lal - Mrs. Savita Devi Poddar Jain
Bhind, Gwalior (MP)

Mr. Chandra Shekhar & his Grandsons
Kangra (Himachal Pradesh)

Late. Mr. Birender Singh - Late. Mrs. Laxmi Devi
Udi - Etawah, UP

Mr. Vikas Chand Jain - Mrs. Beena Devi
Gaya (Bihar)

Mr. Abhishek Tulsiman
Surat (Guj.)

Mr. Jaswantlal Girdharlal
Shah (Tuwawala), Mumbai

Mrs. Madhu Kadhuria
Faridabad (HR)

Mr. Vaibhav Goel
Lucknow (UP)

Mr. Mahendra Chopra
Baytu - Barmer (Raj.)

Mr. Ankit Aktwal
Kota (Raj.)

Mrs. Kamlesh Agrawal
Kharghar - Raigarh (MH)

Mr. Pradeep Joshi
Kota (Raj.)

Mr. S.P. Singh
Kanpur

Mr. Bajrang Ji
Mandaur (MP)

Mr. Basant Lal Gaggal
Rampur (HP)

Mrs. Vidhya Gautam
Shimla (HP)

Lt. Mr. Kewal Krishan Mittal
Ludhiana (PB)

Mr. B.R. Sharma
Shimla (HP)

Mrs. Mansa Devi
Shimla (HP)

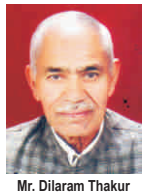

Mr. Dilaram Thakur
Shimla (HP)

Mr. Rakesh Sharma
Alwar (Raj.)

Lt. Mr. Purushottam Singhal
Balotra - Barmer (Raj.)

Mr. Sajjan Jejani
Bissau - Jhunjhunu

Lt. Mr. Babu Lal
Bissau - Jhunjhunu

Mrs. Kanak Devi Jain
Jaipur (Raj.)

Mr. S.C. Goel
Ghaziabad (UP)

Mr. Ram Narayan Sharma
Jaipur (Raj.)

Lt. Mrs. Raj Kumari

Mr. Subhash Agrawal
Dhule (MH)

Mr. B.B. Goel
Lucknow (UP)

Mrs. Sarla Holani
Mumbai

जवानी में हम मुसीबतों के पीछे भागते हैं, बुढ़ापे में मुसीबतें हमारे पीछे।

FCRA

Tara Sansthan is registered under Foreign Contribution Regulation
Act (FCRA) with the Govt of India for receiving Donations from Foreign Countries VIDE Registration No. 125690108

TARA NETRALAYA - Delhi

WZ-270, Village - Nawada, Opp. 720, Metro Pillar, Uttam Nagar, Delhi - 59
Phone No. 011-25357026, +91 9560626661

TARA NETRALAYA - Mumbai

Unit No. 1408/7, 1st Floor, Israni Indl. Estate, Penkarpara, Nr. Dahisar Check-post, Meera Road, Thane - 401107 (M.S.) INDIA
Phone No. 022-28480001, +91 7821855753

TARA NETRALAYA - Faridabad

Bhatia Sewak Samaj (Regd.), N.H. - 2, Block - D, N.I.T., Faridabad (Haryana) 121001
Phone No. 0129-4169898, +91 7821855758

Area Specific Tara Sadhak

Amit Sharma Area Delhi Cell : 07821855747	**Sanjay Choubisa** Area Delhi Cell : 07821055717	**Gopal Gadri** Area Delhi Cell : 07821855741	**Bhanwar Devanda** Area Noida, Ghaziabad Cell : 07821855750	**Rameshwar Jat** Area Gurgaon, Faridabad Cell : 07821855758
Kamal Didawania Area Chandigarh (HR) Cell : 07821855756	**Ramesh Yogi** Area Lucknow (UP) Cell : 07821855739	**Narayan Sharma** Area Hyderabad Cell : 07821855746	**Vikas Chaurasia** Area Jaipur (Raj.) Cell : 09983560006	**Bharat Menaria** Area Mumbai Cell : 07821855755
Suresh Kumar Lohar Area Mumbai Cell : 07821855759	**Prakash Acharya** Area Surat (Guj.) Cell : 07821855726	**Kailash Prajapati** Area Saurashtra (Guj.) Cell : 07821855738	**Deepak Purbia** Area Punjab Cell : 07821055718	**Pavan Kumar Sharma** Area Bikaner & Nagpur Cell : 07821855740

'Tara' Centre - Incharge

Shri S.N. Sharma
Mumbai
Cell : 09869686830

Smt. Rani Dulani
10-B/B, Viceroy Park, Thakur Village,
Kandiwali (W), Mumbai - 400 101, Cell : 09029643708

Shri Pawan Sureka Ji
Madhubani (Bihar)
Cell : 09430085130

Shri Satyanarayan Agrawal **Kolkata** Cell : 09339101002	Shri Bajrang Ji Bansal **Kharsia (CG)** Cell : 09329817446	Smt. Pooja Jain **Saharanpur (UP)** Cell : 09411080614	Shri Naval Kishor Ji Gupta **Faridabad (HR.)** Cell : 09873722657
Shri Anil Vishvnath Godbole **Ujjain (MP)** Cell : 09424506021	Shri Vishnu Sharan Saxena **Bhopal (M.P.)** Cell : 09425050136, 08821825087	Lt. Col. A.V.N. Sinha **Lucknow** Cell : 09598367090	Shri Dinesh Taneja **Bareilly (UP)** Cell : 09412287735

Donors Kindly NOTE

It you do not get any response from any of the above mentioned Mob. numbers,
Kindly inform us at Mobile No. 09549399993 and / or 09649399993

INCOME TAX EXEMPTION ON DONATIONS

Donations to Tara Sansthan are TAX-EXEMPT under section 80G of I.T. Act. 1961 at the rate of 50%

Donation to Tara Sansthan may be sent by cheque/draft drawn in favor of Tara Sansthan, payable at Udaipur, OR may be remitted direct into any of the following Bank Accounts, with caopy of pay-in-slip and Donor's address to Tara Sansthan, Udaipur for expediting Donation Acknowledgment Receipt

Tara Sansthan Bank Account

ICICI Bank (Madhuban)	A/c No. 004501021965	IFSC Code : icic0000045
State Bank of India	A/c No. 31840870750	IFSC Code : sbin0011406
IDBI Bank	A/c No. 1166104000009645	IFSC Code : IBKL0001166
Axis Bank	A/c No. 912010025408491	IFSC Code : utib0000097
HDFC	A/c No. 12731450000426	IFSC Code : hdfc0001273
Canara Bank	A/c No. 0169101056462	IFSC Code : cnrb0000169
Central Bank of India	A/c No. 3309973967	IFSC Code : cbin0283505
Punjab National Bank	A/c No. 8743000100004834	IFSC Code : punb0874300
Yes Bank	A/c No. 065194600000284	IFSC Code : yesb0000651

तारांशु (हिन्दी - अंग्रेजी) मासिक, अगस्त - 2017 | समाचार पत्र पंजीयन सं. : RAJBIL/2011/42978
प्रेषण तिथि - 11-18 प्रति माह | डाक पंजीयन क्र. : आर.जे./यू.डी./29-102/2015-2017
प्रेषण कार्यालय का पता : मुख्य डाकघर, चेतक सर्कल, उदयपुर | मुद्रण तिथि : 9 प्रतिमाह

तारा संस्थान के नि:शुल्क मानवीय सेवा प्रकल्प, आपसे प्रार्थित अपेक्षित सहयोग -सौजन्य राशि

नेत्र चिकित्सा सेवा (मोतियाबिन्द ऑपरेशन)

17 ऑपरेशन - 51000 रु., 09 ऑपरेशन - 27000 रु., 06 ऑपरेशन - 18000 रु., 03 ऑपरेशन - 9000 रु., 01 ऑपरेशन - 3000 रु.

नेत्र शिविर सौजन्य

मोतियाबिन्द जाँच-चयन-शिविर आयोजन एवं 30 ऑपरेशन सहयोग सौजन्य, प्रति शिविर - 151000 रु.
चश्मा जाँच - चश्मा वितरण - दवाई सहयोग राशि, प्रतिशिविर - 21000 रु.

तृप्ति योजना सेवा	गौरी योजना सेवा	आनन्द वृद्धाश्रम सेवा	वृद्धाश्रम बुजुर्गों
(प्रति बुजुर्ग खाद्य सामग्री सहायता)	(प्रति विधवा महिला सहायता)	(प्रतिबुजुर्ग)	हेतु भोजन मित्ति
01 वर्ष - 18000 रु.	01 वर्ष - 12000 रु.	01 वर्ष - 60000 रु.	3500 रु.
06 माह - 9000 रु.	06 माह - 6000 रु.	06 माह - 30000 रु.	(एक समय)
01 माह - 1500 रु.	01 माह - 1000 रु.	01 माह - 5000 रु.	

21000 रु. की संचित राशि से वृद्धाश्रम वासियों को हर साल एक निश्चित दिवस पर भोजन करवाएँ।

एक विधवा महिला के बच्चे की शिक्षा हेतु वार्षिक सहयोग - 12000 रु.

सहयोग राशि - आजीवन संरक्षक 21000 रु., अर्जित ब्याज से दानदाता के नाम से इच्छित दिनांक को प्रतिवर्ष 2 मोतियाबिन्द ऑपरेशन,
आजीवन सदस्य 11000 रु., अर्जित ब्याज से दानदाता के नाम से इच्छित दिनांक को प्रतिवर्ष 1 मोतियाबिन्द ऑपरेशन (संचितनिधि में)

दान पर आयकर में छूट : तारा संस्थान को दिया गया दान आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत आयकर में 50% छूट योग्य मान्य है।

निवेदन : कृपया अपना दान - सहयोग नकद या 'तारा संस्थान, उदयपुर' के पक्ष में देय चैक/ड्राफ्ट द्वारा संस्थान के पते पर प्रेषित करने का कष्ट करें, अथवा : अपना दान सहयोग तारा संस्थान के निम्नांकित किसी बैंक खाते में जमा करवा कर 'पे-इन-स्लिप' अपने पते सहित संस्थान को प्रेषित करें ताकि दान - सहयोग प्राप्ति रसीद आपको तत्काल भेजी जा सके।

ICICI Bank (Madhuban) A/c No. 004501021965	IFSC Code : icic0000045	Canara Bank A/c No. 0169101056462	IFSC Code : cnrb0000169
SBI A/c No. 31840870750	IFSC Code : sbin0011406	Central Bank of India A/c No. 3309973967	IFSC Code : cbin0283505
IDBI Bank A/c No. 1166104000009645	IFSC Code : IBKL0001166	PNB Bank A/c No. 8743000100004834	IFSC Code : punb0874300
Axis Bank A/c No. 912010025408491	IFSC Code : utib0000097	YES Bank A/c No. 065194600000284	IFSC Code : yesb0000651
HDFC A/c No. 12731450000426	IFSC Code : hdfc0001273	Pan Card No. Tara - AABTT8858J	

'तारा' के सेवा प्रकल्पों का कृपया टी.वी. चैनल्स पर प्रसारण देखें :-

पारस — 'पारस' रात्रि 7:40 से 8:00 बजे	आस्था भजन — 'आस्था भजन' प्रात: 8:40 से 9:00 बजे	आस्था — 'आस्था' रविवार दोपहर 2:30 बजे	संस्कार — 'संस्कार चैनल' दोपहर 2:40 से 2:55 बजे

बुक पोस्ट

Tara
बुजुर्गों के लिए...

तारा संस्थान

डीडवाणिया (रतनलाल) नि:शक्तजन सेवा सदन
236, सेक्टर - 6, हिरण मगरी, उदयपुर (राज.) 313002
मो. +91 9549399993, +91 9649399993
Email : info@tarasansthan.org, donation@tarasansthan.org
Website : www.tarasansthan.org